A Quarterly News Letter of Maitree Jankalyan Samiti

मैत्री समूह

Chirping Sparrow

Year - 5, Issue-IV, July to Sep 2009

आज फिर शुरू हुआ जीवन

आज मैंने एक छोटी सी
सरल सी कविता पढ़ी।
आज मैंने सूरज को डूबते
देर तक देखा।
जी भर आज मैंने
शीतल जल से स्नान किया।
आज एक छोटी सी बच्ची
आयी किलक मेरे कन्धे चढ़ी।
आज मैंने आदि से अन्त तक
पूरा गान किया।
आज फिर जीवन शुरू हुआ।

-रघुवीर सहाय

क्षमावाणी
बालदिवस

Pride of Society

प्रो. नलिन के. शास्त्री

प्रो. नलिन के. शास्त्री पिछले तीन दशकों से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। जीव वैज्ञानिक प्रो. नलिन के. शास्त्री ने शिक्षा मूल्यों, परियोजना – आंकलन, दूरवर्ती शिक्षा, समसामायिक विकास, उच्च शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण, निजीकरण, विश्वविद्यालय पद्धति के प्रबंधन और अवधारणा की दिशा में बहुमूल्य कार्य किया है। मगध विश्व विद्यालय, बोध गया में वनस्पति शास्त्र के प्रोफेसर के अलावा भी आप कई संस्थानों में प्रबंधन आदि पदों पर रहे हैं। उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों पर केन्द्रित आपकी पाँच किताबें, 27 रिसर्च पेपर और दर्जनों आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। सुप्रसिद्ध विद्वान श्री नेमीचन्द्र शास्त्री जी के पुत्र प्रो. नलिन के. शास्त्री को चिंतन, लेखन, पठन और जैन धर्म पर आधारित अनेक विषयों पर भाषण देने की कला विरासत में मिली है। आप जैन शास्त्र के अन्तर्राष्ट्रीय ग्रीष्मकालीन स्कूल के अध्यापक रहे हैं। जैना कान्फ्रेंस यू.एस. (2007) के साथ–साथ कई सेमीनार और कार्यशालाओं में आपने कई आलेख पढ़े हैं। प्रो. शास्त्री कुंद–कुंद ज्ञानपीठ, इन्दौर के निदेशक, तीर्थकर ऋषभदेव विद्वान महासंज्ञ एवं अखिल भारतीय श्रुतसंवर्धनी महासभा के उपाध्यक्ष हैं। आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र समिति द्वारा मार्च 2009 को तिजारा में आयोजित जैन पत्रकारों की कान्फ्रेंस – संवाद के समन्वयक रहे हैं।

Young Achiver

Nirkhi R Shah, Ahmedabad
MBBS B.J. Medical College
91.2% XII, AIPMT 172
AIR and RPMT with 67th general rank and 15th rank among girls.

Neha Jain,vidisha
BE, Hons., BITS-Pilani
YJA 2007, 1st Rank MP Board XII 2009,
6th Rank MP Board X, Selected for Genesys Programme
Essayist- More than 50 awards in essay writing competitions

Nishi Modi, Sagar
YJA 2004 , University topper, B-Pharm
Hari Singh Gaur university, Sagar
GATE 2009 , 96.41%

Chirping Sparrow
Year - 5, Issue - IV

Chirping Sparrow is published quarterly by the **Maitree Jankalyan Samiti** 1/205, Professor Colony, Agra-282 002, E-mail : maitreesamooh@hotmail.com, Website : www.maitreesamooh.com Mobile: 94254-24984

It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of **Maitree Jankalyan Samiti.**

मंदिर का विज्ञान

विश्व–प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटाइन के अनुसार "विज्ञान धर्म के बिना पंगु है और धर्म विज्ञान के बिना अंधा है" सौभाग्य से जैन धर्म के अनेक सिद्धांत भी विज्ञान की कसौटी पर कसे गये हैं और सदैव खरे उतरे हैं।

आज का युवा जो विज्ञान एवं भौतिक वातावरण में बड़ा हुआ है, अन्धानुकरण न करके यथार्थ को जानने–मानने के लिए उत्सुक है। हर बात में वह प्रश्न एवं तर्क करता है। यहां युवा से मेरा अभिप्राय उस पूरे वर्ग से है जो स्वयं को नई पीढ़ी कहता है। इस समूह ने समय–समय पर कई सार्थक प्रश्न उठाए हैं। जैसे पूजा क्यों ? अभिषेक क्यों ? पूजा मंदिर में ही क्यों ? घर में क्यों नहीं ? मन्दिरों के विशाल होने पर भी मूल गंभारे, गर्भगृह, इतने छोटे क्यों ? मूल गंभारे में खिड़की क्यों नहीं होती ? मूल गंभारे में अंधेरा क्यों बनाये रखा जाता है ?

इन प्रश्नों का वैज्ञानिक ढंग से उत्तर देने का प्रयास किया है श्री पराशक्ति महिला महाविद्यालय, कूरटालम, तमिलनाडू की शोध छात्राओं ने। मद्रास में आयोजित एक प्रदर्शनी में वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि धर्म में भी विज्ञान उतना ही सक्रिय है जितना किसी और क्षेत्र में। इन छात्राओं ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि मंदिर की सारी क्रियाओं के पीछे वैज्ञानिक तथ्य हैं। हर क्रिया का तन, मन और वचन पर स्पष्ट और सीधा असर होता है। अपनी खोज से उन्होंने यह तय किया है कि हमारे मंदिर शिक्षा, विज्ञान, कला, स्थापत्य एवं आकार अभियांत्रिकी के केन्द्र हैं व परम शांति एवं चरम आनन्द के अचूक स्त्रोत हैं।

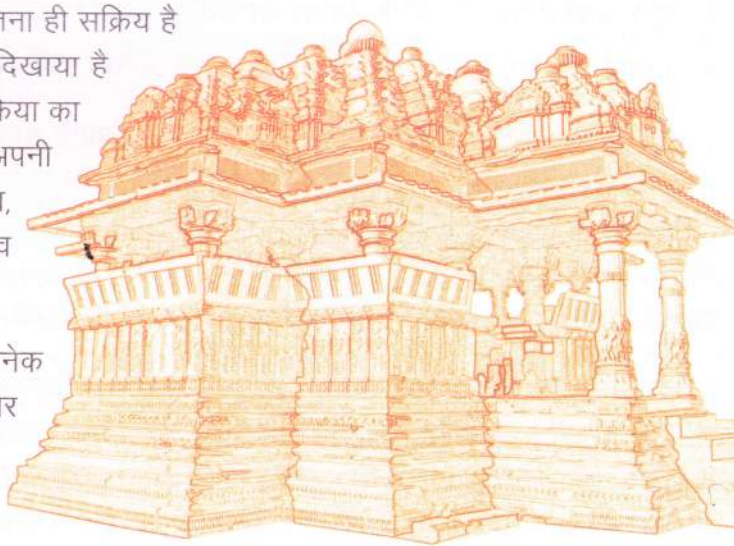

आगम में गर्भगृह के निर्माण एवं आकार के विविध और अनेक परिमाण तथा शैलियां बतायी हैं। गर्भगृह में विराजित जिनेश्वर प्रभु की प्रतिमा एवं गर्भगृह के आकार एवं परिमाण में गहरा संबंध है। मूल गर्भगृह एवं मूल प्रतिमा के आकार अनुपात के विशेष संबंध से मूल गंभारे की हवा का एक–एक अणु अधिकतम घूर्ण या आवर्तिता से कंपित होता है। जैसे ही गंभारे के बाहर मन्त्रोच्चार किया जाता है, गंभारे के वायुकण/एयर मोलीक्यूल अधिकतम आवर्तिता/मेक्जीमम एम्प्लीट्यूड से कंपित हो उठते हैं, जिससे इंटेंस साउंड/तीव्र नाद पैदा होता है। इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए मूल गंभारे के बाहर रबर के एक टुकड़े पर चोट खाये कांपते ट्यूनिंग फोर्क को रखने पर स्वतः ही गंभारे से ओम् शब्द का सुमधुर नाद गहनता से उत्पन्न होता है।

यह सिद्ध करने के लिए कि मूल गंभारे में ऋण आयनों की अधिकता होती है, आसवन विधि/कंडेन्सर मेथड प्रयोग में ली जाती है। इस विधि के द्वारा शोध–छात्राओं ने यह सिद्ध किया है कि मूल गंभारा ऊर्जा का अनवरत स्त्रोत है। इन शोध–छात्राओं ने एक मूर्ति की अभिषेक के पहले एवं अभिषेक के बाद विद्युत प्रतिरोधिता (रेजिस्टेंस) एवं विद्युत चालक क्षमता (कंडेन्सिटी) मापी। उन्हें लगा कि अभिषेक के पहले प्रतिरोध अधिक होता है और अभिषेक के बाद प्रतिरोध कम हो जाता है।

अभिषेक पूजा या मन्त्रोच्चार से 'ऋण–आयन' अर्थात् निगेटिव आयन में वृद्धि होती है। निगेटिव आयन का आवेश प्राणदायक वायु ऑक्सीजन को हीमोग्लोबिन से मिलाने में सहायक होता है। हीमोग्लोबिन मानव रुधिर का वह तत्व है जिसमें ऑक्सीजन घुलकर शरीर के प्रत्येक भाग में पहुंचती है। यह सिद्ध किया जा चुका है कि जहां 'ऋण–आयन' नहीं होते हैं वहां

मृत्यु तक हो सकती है। 'ऋण–आयनों' वाले ये स्थान स्वास्थ्यवर्द्धक होते हैं। ऋण–आयनों की अधिकता समुद्री किनारों, झरनों के करीब या पहाड़ी स्थानों पर पायी जाती है। हमारे मंदिर इसीलिए ऐसे रमणीय और सार्थक स्थानों पर स्थित हैं। आज के वातावरण में जबकि हर जगह विद्युत प्रदूषण (इलेक्ट्रिकल पोल्यूशन) ज्यादा है, इन ऋण–आयनों की कमी हरदम महसूस की जाती है, ये ही मूल्यवान 'ऋण–आयन' मूल गंभारे में विशेष प्रकार के पदार्थों द्वारा मूर्ति का अभिषेक करने पर उत्पन्न होते हैं। चन्दन आदि वातावरण में नमी बनाये रखने में सहायक होते हैं।

जैसे ही गंभारे के बाहर मन्त्रोच्चार किया जाता है, मूल गंभारे में उपस्थित हवा में अधिकतम ऊर्जा के साथ कम्पन शुरू हो जाता है। मन्त्रोच्चार के पश्चात् आरती, चंवर इत्यादि का प्रयोग होता है। आरती चंवर इत्यादि से गर्भगृह की हवा, जो ऊर्जा से आवेशित होती है, प्रार्थना करनेवालों की तरफ आती है, जिसे श्वास में लेने से ऑक्सीजन को हीमोग्लोबिन में प्रविष्ट होने मे मदद मिलती है। इस प्रकार इन शोध–छात्राओं के निष्कर्ष हैं कि –

1. गर्भगृह आयतन–अनुनादक / वॉल्यूम रीजोनेटर है, अतः ओम् नाद की उत्पत्ति में सहायक है।
2. मूर्ति ऊर्जा भंडार / एनर्जी रिजर्वायर का कार्य करती है।
3. गर्भगृह की हवा, ऊर्जा के स्थानांतरण (ट्रांसफर ऑफ एनर्जी) में माध्यम का कार्य करती है।

यही कारण है कि मंदिर में पूजा, अर्चना, भक्ति इत्यादि महत्वपूर्ण माने गए हैं क्योंकि मंदिर में उत्पन्न ऊर्जा मनुष्य को सुख–शांति एवं आत्मोन्नति की ओर बढ़ाती है। विशेष प्रकार से बनाये गये गर्भगृह में पूजा एवं अर्चना से आध्यात्मिक शक्ति की उत्प्रेरणा होती है। इन्हीं कारणों से गंभारे में खिड़की नहीं रखी जाती ताकि ऊर्जा सिर्फ मूल गंभारे के मुख्य दरवाजे से प्रार्थी पर सीधा प्रभाव कर सके एवं गर्भगृह में बिजली के बल्ब इत्यादि द्वारा रोशनी नहीं की जाती, क्योंकि उससे 'ऋण–आयन' समाप्त हो जाते हैं। इसी कारण मंदिर में एवं मूल गंभारे में सिर्फ घी के दीपक का प्रकाश किया जाता है।

इस तरह यह सिद्ध होता है कि हमारे पूर्वजों द्वारा निरूपित / निर्धारित विधि–विधान बहुत गहरा अर्थ रखते हैं। हमारी संस्कृति न केवल वैज्ञानिक सिद्धांतों की जन्मदात्री है, बल्कि आत्मोन्नति की अपूर्व सीढ़ी भी है। रूसी वैज्ञानिक सेम्योनोव डी. किरलियान ने ऐसी हाई फ्रीक्वेन्सी फोटोग्राफी विकसित की है, जिससे यह सिद्ध होता है कि मंदिर की माला एवं घर की माला में अत्यधिक फर्क होता है। 'किरलियान फोटोग्राफी' जो इन दिनो शोध–कार्य में सर्वत्र प्रयुक्त है, "किरलियान एफेक्ट" बताने में सहायक सिद्ध हो रही है। अगर किसी के हाथ का चित्र 'किरलियान फोटोग्राफी' से लिया जाए तो न सिर्फ हाथ का फोटो ही आएगा, साथ ही साथ हाथ के आस–पास जो किरणें हैं, उनका भी चित्र आएगा। किरलियान का कहना है कि बीमारी के आने के छह महीने पहले ही बता दिया जा सकेगा कि आदमी बीमार होने वाला है। इस प्रकार मन्त्र, पूजा व आराधना हृदय परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया हैं। भारतीय संस्कृति आज के विश्व में शांति प्रदान करने वाली संस्कृति है, इसलिए महर्षि अरविन्द को कहना पड़ा, "भारत भूमि केवल जमीन का टुकड़ा नहीं है, वह एक अपूर्व आत्मिक शक्ति है।" मंदिर, पूजा, मन्त्रोच्चार सभी आध्यात्मिक शांति एवं आत्मोत्थान के अपूर्व स्त्रोत हैं। अन्धानुकरण न कर यदि हम इन साधनों के गूढ़ रहस्यो को समझने की कोशिश करें तो शायद प्रभु परमेश्वर के इस विराट प्रेम–भरे जगत से बहुत कुछ सीखा जा सकता है एवं जीवन को अलौकिक बनाया जा सकता है।

प्रस्तुति-बी.टी. बजावट (तीर्थंकर से साभार)

रहे भावना ऐसी मेरी
सरल सत्य व्यवहार करूं,
बने जहाँ तक इस जीवन में
औरों का उपकार करूं।।
मैत्री भाव जगत में मेरा
सब जीवों से नित्य रहे,
दीन दुखी जीवों पर मेरे
उर से करूणा स्त्रोत बहे।।

Q. *यहां पृथ्वी पर हमारा उद्देश्य मोक्ष पाना है, मोक्ष में हमारा उद्देश्य क्या होगा?* **सविता जैन, फुटेरा**

A. पृथ्वी पर हम अपने जीवन को अच्छा बनाकर क्रमशः शरीर से मुक्त होने की कोशिश करते हैं। हमारा उद्देश्य यही है कि जन्म–मरण और शरीर से हम मुक्त हो सकें, मुक्त होने के बाद कुछ भी करना शेष नहीं रहता, वहां सबसे मुक्त होकर अपनी आत्मा में लीन रहकर अनन्त सुख का अनुभव करना होता है, जैसे खाना बनाते समय माँ सारा कार्य करती है लेकिन खाना खाकर वह तृप्ति का अनुभव करती है, ऐसे ही तृप्ति का अनुभव मोक्ष होने पर व्यक्ति को होता है। जैसे छुट्टी की घंटी सुनकर के बच्चों को मुक्त होने की खुशी होती है वैसे ही खुशी का अनुभव मोक्ष में भी होता है।

Q. *मैं आपकी शिष्या बनना चाहती हूँ सही मार्ग क्या है ?* **सुलोचना वी.जैन, अहमदाबाद**

A. किसी का शिष्य/शिष्या होना बहुत कठिन बात है, असल में इसमें अपने अहंकार को पूर्णतः विसर्जित करना होता है तब जाकर हम किसी के शिष्य हो पाते हैं। शिष्य अपने गुरू के अनुसार उनकी ही भाषा में बोलता है, उनके ही कानों से सुनता है और उनकी ही आँखों से देखता है, इतना समर्पण होना चाहिए। यह सम्बन्ध भावनात्मक है – कुछ नियमों के ले लेने या जाप इत्यादि गुरूमंत्र की तरह करने मात्र से ही इस सम्बन्ध की पूर्ति नहीं होती। इसके लिए मन का झुकना, समर्पित होना आवश्यक है। आप यदि शिष्यत्व को पालेंगे, तो गुरू को पाना आसान होगा। जो विनेय होता है वही शिष्यत्व को प्राप्त कर पाता है। भगवान की वाणी को सुनने, समझने और ग्रहण करने की जिसमें क्षमता है और जो भगवान की वाणी के अनुसार आचरण करता है वही विनेय कहलाता है। उसे ही गुरू की प्राप्ति होती है। गुरू से कहा नहीं जाता है कि मैं आपका शिष्यत्व ग्रहण करना चाहता हूँ बल्कि अपने गुणों के द्वारा, अपने समर्पण के द्वारा शिष्य गुरू को प्राप्त कर लेता है और उनके अनुसार अपना जीवन बना लेता है तथा वह गुरू के संकेतो को भलीभांति समझने लगता है।

Q. *क्या एक्वागार्ड से फिल्टर किए गए पानी को फिर से छानना आवश्यक है? माँ ऐसा करने को कहती है।* **अनु बांझल, शिवपुरी**

A. असल में पानी छानने का उद्देश्य जीव–रक्षा की कोमल भावना विकसित करना है। पानी छानते समय मात्र कपड़े का छन्ना (filter cloth) ही नहीं बल्कि करूणा और दयाभाव का छन्ना भी लगाना आवश्यक है। अपने प्राणों की रक्षा में सहायक जल को इस तरह सावधानी से उपयोग में ले, जिससे उसके आश्रित जीवों का विनाश न हो। पानी छानकर पीना अहिंसा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण इन सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ है। जैनधर्म के अनुसार पानी छानकर उसके शेष भाग को उसी जल स्त्रोत तक पहुंचाना अनिवार्य है, जिससे पानी निकाला गया है। यह प्रक्रिया अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। नारू नामक रोग के संक्रमित होने का प्रमुख कारण बिना छना प्रदूषित पानी है। वर्तमान समय में पीने के पानी के शुद्धिकरण के कई तरीके प्रचलन में है। फिल्टर, एक्वागार्ड, यू.व्ही सिस्टम, आर.ओ. आदि । बाजार में भी बोतल या पाउच में पीने का पानी उपलब्ध है। हमारा प्रयास यह हो कि आधुनिक तकनीक से पानी शुद्धिकरण की प्रक्रिया जीवरक्षा की भावना के साथ ही की जाए।

दैनिक जीवन में पानी छानने की प्रक्रिया को हम प्रत्येक परिस्थिति में आसानी से मेनेज कर सकते हैं । इसके आसान तरीके हैं –

1. घर में पीने का पानी उपयोग में लेते समय छान लें और घर से बाहर जाते वक्त अपने साथ छने पानी से भरा वाटर बैग रखें।
2. पानी छानने का साफ सुथरा कपडा सदा साथ रखें। आवश्यकता पडने पर उससे पानी छानें।
3. बिसलरी आदि का मिनरल वाटर भी प्रदूषित हो सकता है इसलिए जहाँ तक संभव हो सके पानी के प्राकृतिक स्त्रोत से स्वयं साफ सुथरा जल ग्रहण करें।

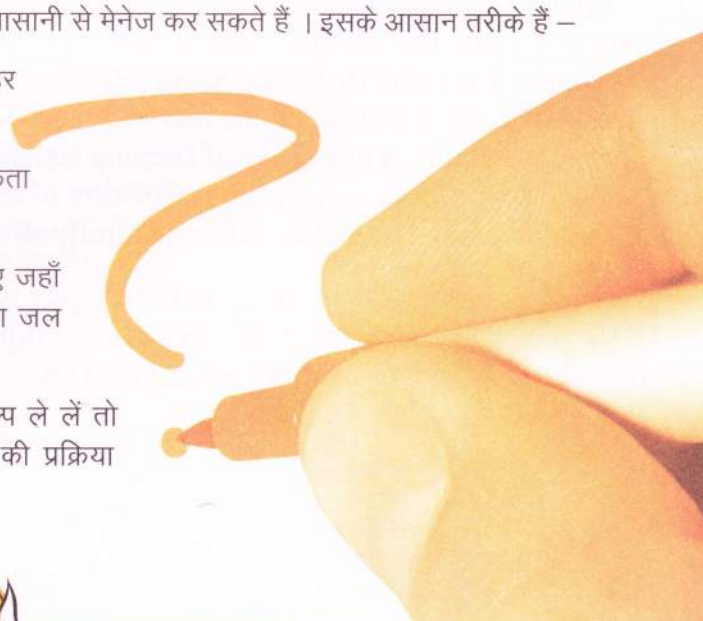

मेरा ऐसा मानना है कि एक बार हम पानी छान कर पीने का संकल्प ले लें तो प्रारम्भ में थोडी कठिनाई अवश्य होगी पर धीरे–धीरे पानी छानने की प्रक्रिया सहजता से होने लगेगी और हम स्वयं अच्छा महसूस करेंगे।

Q. नर्क और स्वर्ग का स्थान हम अपनी समझ के अनुसार कहाँ माने? और यह लोक का आकार क्या ब्रह्माण्ड का ही आकार है ? कृपया समझाइए। श्वेता सिंघई, सागर

A. स्वर्ग और नर्क की मानसिक स्थिति भी है और भौगोलिक स्थिति भी है, जहाँ सुख है वहीं स्वर्ग है और जहाँ दुःख है वहीं नर्क है। लोक के ऊपरी भाग में स्वर्ग है और निचले भाग में नर्क है। जैन दर्शन में ब्रह्माण्ड को ही लोक कहते हैं। ऐसे कई ब्रह्माण्ड लोक में हैं। लोक का आकार पुरूष के समान है। पशुओं और हम मनुष्यों का आवास मध्य लोक में है।

Q. शास्त्रों के अनुसार कुशास्त्र, कुदेव और कुगुरू को पूजना पाप है, किन्तु उसकी निन्दा भी नहीं करनी चाहिए। मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूं, मुझे अपने Friend Circle में कभी Mosque या Hindu Temple जाना पड़ जाता है। मैं अन्दर जाकर भी नमस्कार नहीं करती तो क्या यह भी उनका अपमान है ? यदि हाँ तो मुझे क्या करना चाहिए ? श्वेता सिंघई, सागर

A. हमारे यहाँ पूजनीय तो वीतराग देव, शास्त्र, गुरू ही हैं। इनके अलावा सब आदरणीय हैं। पर यह भी सही है कि हमें किसी के भगवान की निन्दा नहीं करनी चाहिए। हम अपने पिता को जो सम्मान देते हैं वह दूसरे के पिता को नहीं देते, और यह उनका अपमान नहीं होता। हम उनको अपना पिता नहीं मानकर दूसरों का पिता मानकर तो आदर कर सकते हैं। ऐसे ही हमें दूसरों के मंदिर मे यदि जाना पड़े तो वहां णमोकार मंत्र का जाप करना चाहिए।

Q. मन्दिरों में जिनवाणी के अन्दर कुछ पत्र लिखे रखे रहते हैं, जिनमें एक मंत्र लिखा रहता है और उस जैसे दस और पत्र लिखकर अलग-अलग पुस्तकों में रखने होते हैं, ऐसा करने पर आपका कोई भी कार्य पूर्ण होगा और नहीं करने पर हानि होगी ऐसा लिखा रहता है। ऐसे पत्रों का क्या करना चाहिए ?क्या उन्हें जिनवाणी से हटा देना चाहिए ? अनुभा जैन, देवरी सागर

A. जिनवाणी में जो विभिन्न प्रकार के पत्र रखे रहते है वे लोगों की भावनाओं का लाभ उठाने के लिए रखे जाते हैं। हमें उन पर विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो भी अच्छा बुरा होता है वह हमारे कर्मों पर निर्भर करता है। इसलिए ऐसे पत्रों को जिनवाणी से निकाल कर जलाशय में विसर्जित कर देना चाहिए।

Q. What is the reason and message behind the nudity followed by Jain monks?

A. Nudity of a Digamber Jain monk is the transparency personified, which induces one to be transparent in their dealings and life in general. Transparency means to lead a simple, easy and compassionate life. Nudity preaches us to lead a passionless life like a newly born baby. To lead a passionless life means to have control on passions and to attain purity of heart. In the present era, it is necessary to have control on the increasing passionate feelings, violence and improper conduct of the youths. Nudity is indicative of keeping equanimity under all circumstances, whether favourable or adverse by becoming self-reliant. Nudity of a Digamber Jain monk teaches to us to enhance our eternal powers and to endure with equanimity all the physical sufferings.

As a matter of fact, Digamber Jain Philosophy is the ultimate stage of development of possession-less-ness. A Digamber Jain monk leaves everything for others' use after meeting barest necessities of his body. His conduct is the best example of giving most to others while taking the bare minimum.

यदि आपको कोई शंका या प्रश्न है, तो हमें लिख भेजिये। मुनिश्री द्वारा उसका उत्तर दिया जाकर शंका का समाधान किया जायेगा। –सम्पादक

Dear Children,

I like being with children and talking to them and, even more, playing with them. For the moment I forget that I am terribly old and it is very long ago since I was a child. But when I sit down to write, I cannot forget my age and the distance that separates you from me. Old people have a habit of delivering sermons and good advice to the young. I remember that I disliked this very much long ago when I was a boy. So I suppose you do not like it very much either. Grown-ups also have a habit of appearing to be very wise, even though very few of them possess much wisdom. I have not yet quite made up my mind whether I am wise or not. Sometimes listening to others I feel that I must be wise and brilliant and important. Then, looking at myself, I begin to doubt this. In any event, people who are wise do not talk about their wisdom and do not behave as if they were very superior persons...

What then shall I write about? If you were with me, I would love to talk to you about this beautiful world of ours, about flowers, trees, birds, animals, stars, mountains, glaciers and all the other beautiful things that surround us in the world. We have all this beauty all around us and yet we, who are grown-ups, often forget about it and lose ourselves in our arguments or in our quarrels. We sit in our offices and imagine that we are doing very important work. I hope you will be more sensible and open your eyes and ears to this beauty and life that surrounds you. Can you recognise the flowers by their names and the birds by their singing? How easy it is to make friends with them and with everything in nature, if you go to them affectionately and with friendship. You must have read many fairy tales and stories of long ago. But the world itself is the greatest fairy tale and story of adventure that was ever written. Only we must have eyes to see and ears to hear and a mind that opens out to the life and beauty of the world.

Grown-ups have a strange way of putting themselves in compartments and groups. They build barriers... of religion, caste, colour, party, nation, province, language, customs and of rich and poor. Thus they live in prisons of their own making. Fortunately, children do not know much about these barriers, which separate. They play and work with each other and it is only when they grow up that they begin to learn about these barriers from their elders. I hope you will take a long time in growing up... Some months ago, the children of Japan wrote to me and asked me to send them an elephant. I sent them a beautiful elephant on behalf of the children of India... This noble animal became a symbol of India to them and a link between them and the children of India.

I was very happy that this gift of ours gave so much joy to so many children of Japan, and made them think of our country... remember that everywhere there are children like you going to school and work and play, and sometimes quarrelling but always making friends again. You can read about these countries in your books, and when you grow up many of you will visit them. Go there as friends and you will find friends to greet you. You know we had a very great man amongst us. He was called Mahatma Gandhi. But we used to call him affectionately Bapuji. He was wise, but he did not show off his wisdom. He was simple and childlike in many ways and he loved children... he taught us to face the world cheerfully and with laughter.

Our country is a very big country and there is a great deal to be done by all of us. If each one of us does his or her little bit, then all this mounts up and the country prospers and goes ahead fast.

I have tried to talk to you in this letter as if you were sitting near me, and I have written more than I intended.

Jawaharlal Nehru December 3, 1949

कर्त्तव्य की प्रेरणा

जिनबिंब प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन था। अपार जन–समूह के बीच पहली बार आचार्य महाराज ने आर्यिका–दीक्षाएं दीं। एक ही मंच पर ग्यारह आर्यिका और बारह क्षुल्लक दीक्षाएं सम्पन्न हुईं। क्षेत्र की माटी का कण–कण उस दिन महाराज के चरणों में विनत हुआ। सन् 1978 में इस पावन–क्षेत्र पर हमने आचार्य महाराज को अपने चार–पांच शिष्यों के साथ आत्मा–साधना में लीन रहते देखा था। आज आठ–नौ वर्षों बाद एक साथ छियालीस मुनि, आर्यिका, ऐलक व क्षुल्लक के विशाल परिकर के बीच उन्हें उतना ही निर्लिप्त व आत्मस्थ देखकर मन गद्‌गद हो उठा।

सुबह आचार्य–वंदना के समय अत्यन्त भाव–विहल होकर हमने कहा कि महाराज जी, आज हम सभी के लिए थोड़ा कुछ संदेश दीजिए। उन्होंने क्षण भर हमारी ओर देखकर बड़ी आत्मीयता से कहा, "तुम सभी पुण्यात्मा हो। पूर्व संचित पुण्य के फलस्वरूप एक साथ धर्म–मार्ग पर बढ़ रहे हो। मोक्षमार्ग में प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन हमेशा बनाए रखना। जब प्रवृत्ति करो तो यह मानकर चलना कि हम सभी एक साथ हैं और मोक्षमार्गी हैं, सो परस्पर सहयोगी बनना, हमारा पहला कर्त्तव्य है। लेकिन सामायिक के समय सबसे निवृत्त होकर अपने को एकाकी ही मानना और अनुभव करना कि आत्मस्थ होना ही हमारा परम कर्त्तव्य है। यही हमारा तुम सबके लिए संक्षेप में संदेश है।"

सभी ने सुना, मन अत्यन्त हर्षित हुआ। उस दिन लगा कि आचार्य महाराज ने जो स्वयं जिया, उसे ही हमें दिया। जरा भी कमी नहीं रखी।

नैनागिरि 1987

मन ही तो है

यह जानते हुए भी
कि किसी को
कुछ दे नहीं पाउंगा
दिया भी नहीं जा सकता
मन करता है
अपने को समूचा दे दूँ।
किसी की पीडा
बाँट नहीं सकूँगा
कोई बाँट भी नहीं सकता
मन करता है
सबकी पीडा
अपने में ले लूँ।
सारा रास्ता
अकेले ही तय करूँगा
सभी को करना होता हैं
मन करता है
कि सबको साथ ले लूँ।

मुनि क्षमासागर

It's Only Wish

I know that
I won't be able to give
anything to anyone,
nor would it be possible
to do so-
I still wish
to give away
all that's me.
I know that
I won't be able to share
anyone's grief-
nor is it possible
to do so-
I still wish
to take upon myself
everyone's grief.
I know
I have to trudge alone,
everyone has to do it
I wish still
to take everyone along.

Translated by-Sunita Jain

'मुक्ति' से साभार

सदुपयोग

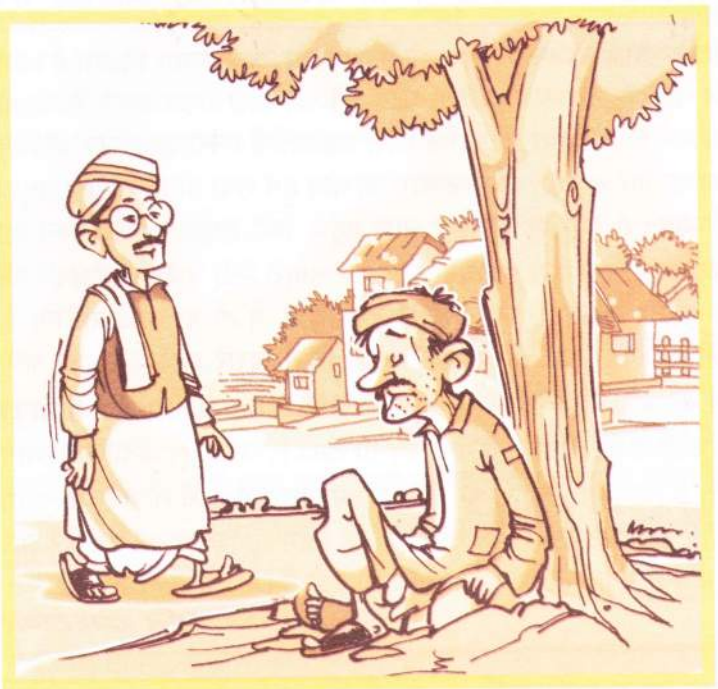

एक बार ईश्वरचंद विद्यासागर एक रास्ते से गुजर रहे थे। रास्ते के किनारे उन्होंने एक पेड के नीचे एक व्यक्ति को चिंतित बैठे देखा। देखने में वह गरीब मालूम पड़ता था और परेशानी उसके चेहरे से साफ झलक रही थी। ईश्वरचंद जी ने जब यह देखा तो वह उसके करीब गए और उस व्यक्ति से बात करने का प्रयास करने लगे, मगर वह व्यक्ति अपनी परेशानी से दुखी था और किसी से बात करने के मूड में नहीं था, सो झल्ला के बोला, "देखो तुम अपना काम करो मैं पहले ही परेशान हूँ तुम मुझे और परेशान मत करो।" उसकी परेशानी को भाँपते हुए ईश्वरचंद जी बोले, "तुम कम से कम मुझे यह तो बताओ की तुम्हे क्या चिंता सता रही है यदि तुम मुझे बता दोगे तो शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूं।" इस पर और गुस्सा होते हुए वह व्यक्ति बोला, "कितने ही लोगों को मैं अपनी कहानी बता चुका हूँ मगर किसी ने मेरी मदद नहीं की, तुम भी मेरी कहानी बड़े ध्यान से सुनोगे और फिर जितनी जल्दी हो सके उसे भूल जाओगे।" फिर एक लम्बे अंतराल के बाद वह बोला – "मुझे आज शाम तक अपने छोटे से घर का पिछले दो साल का लीज का पैसा चुकाना है। बारिश अच्छी न होने की वजह से मेरे पास कुछ भी पैसे नहीं हैं, ऐसे में मैं सड़क पर आ जाउँगा।" और अचानक कोर्ट की तरफ जाने के लिए खडे होकर रूआंसी आवाज में वह व्यक्ति बोला, "कोई मुझे पैसे उधार देने के लिए भी तैयार नहीं हैं,यहाँ कोई किसी की मदद नहीं करता।" बड़े अनमने मन और भारी कदमों से चलता हुआ वह कोर्ट के बंद होने के समय से थोडा ही पहले पहुंचा और लगभग रोता हुआ क्लर्क से बोला–साहब मैं रूपयों का इन्तजाम नहीं कर पाया, आप चाहें तो मेरा घर नीलाम कर सकते हैं और इतना कहकर वह जाने लगा। क्लर्क ने उसे वापिस बुलाया और कहा, "अरे अब चिंता छोडो और खुश हो जाओ, तुम्हारी लीज का पैसा भरा जा चुका है। अभी थोडी देर पहले तुम्हारी तरफ से ही कोई व्यक्ति आकर रकम चुका गया है। "मेरी तरफ से वह चौंका। "हाँ उस खादी के कुरते वाले लम्बे कद के सज्जन को तुम्ही ने भेजा था, ना? "क्लर्क की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि वह समझ गया कि यह वही सज्जन था जिसने उससे पेड़ के नीचे बात की थी और उसे मिलने के लिए वह सड़क की ओर भागा मगर उसे वह व्यक्ति कहीं नहीं मिला।

काफी वर्षों बाद उसने ईश्वरचंदजी को किसी बाजार में देख कर पहचान लिया और उनके चरणों में गिर पड़ा। वह बोला–मालिक बहुत सारे दानी/उपकारी देखे मगर आपके जैसा कोई नहीं देखा और उनके चरणों में गिर पडा। विद्यासागरजी ने उसे अपने गले लगा लिया और कहा, "अरे मैं तो सिर्फ उस पैसे को किसी सदुपयोग में लगााने की कोशिश कर रहा था, और कुछ नहीं।"

पिछले अंक में हमने ओपन फोरम कॉलम में अहिंसा पर आपसे विचार आमंत्रित किए थे। अहिंसा पर मुनि क्षमासागर जी के विचारों के साथ आपकी प्रतिक्रिया भी प्रकाशित की जा रही है।

हम लोग शायद परस्परता का बोध भूल गए हैं। हम ये भूल गए हैं कि हमारे जीवन के लिए हमे किस किस का सहयोग मिलता है। हम जो श्वांस लेते जीव हैं, वह वायुकायिक जीव हैं। जो पानी हम पीते हैं, वो जल कायिक जीव हैं। जो भोजन हम करते हैं वो भी वनस्पतिकायिक जीव हैं। जिस जमीन पर हम चलते हैं वहां भी जीवन है। यहाँ पर हर जगह सांस धडकती है। मेरी सांस लेने के लिए किसी कि सांस छीननी ना पड़े और एक दूसरे के जीवन का हम आदर कर सकें। ऐसा परस्परता का बोध हमें सदा होना चाहिए। मनुष्य वही है, जो सबकी धड़कन का ख्याल रखता है। जहाँ जहाँ भी जीवन है वहाँ वहाँ उसका प्यार पहुंचे, तभी शायद हमारे जीवन की सार्थकता हैं। हम परस्परता और सहअस्तित्व (coexistent) का ख्याल रखें और प्राणी मात्र के प्रति हमारी मैत्री भेजें। जहाँ कहीं हमें लगता है कि किसी को हमारी जरूरत है, तो वहाँ उसकी मदद करनी चाहिए । हमें किसी ने क्या दिया, ये तो हर कोई सोचता है, सोचना ये चाहिए कि हम किसी को क्या दे सके। असल में किसी को दिया हुआ ही अपना होता है, किसी दूसरे का छीना हुआ कभी अपना नहीं होता। अहिंसा में सारे धर्म समाहित हैं और अहिंसा की बड़ी सीधी सी परिभाषा है–Protection and affection is Non violence प्राणी मात्र कि सुरक्षा और सबको प्यार देना ही अहिंसा है। चीटी नहीं मारी यह तो ठीक हैं, पर दूसरे के प्रति सहयोग और प्रेम की भावना रखना, ये अहिंसा की positive approach हैं। मनुष्यता हमारा धर्म है, यह हमें विचार में आये तो हमें परस्परता का बोध जरूर से होगा। हम जीवन को इतना अच्छा बनायें कि लोग हमारी उपस्थिति से खुश हो सकें। हम अविश्वास को दूर करें और एक दूसरे से प्रेम करें। अगर हम आपस में प्रेम करें तो हम यहीं स्वर्ग बना सकते हैं, स्वर्ग कहीं और थोडे ही है।

मुनि क्षमासागर

The Ahimsa that we see in this story is purest in form. Today we see on one hand people who are involved in a lot of violence (to the extent of even killing their own kins) and on the other hand a quite a few people who do practice Ahimsa(may be not as purely as in the story). Nevertheless if we all embrace Ahimsa, the earth would become a place much better than heaven!

Ankita, Faridabad

In present times, people do compromise with the values of non-violence in unfavourable circumstances. In the story, the doctor asks the Masterji's family to use non-vegetarian things for cure, but in modern times, these things are recommended in a different way -the English medicines. How many of us know the exact ingredients of the medicines we consume? We do not care about the ingredients of the medicine and consume them directly within a few seconds. And getting out of the hold of the English medicines is what one feels is difficult. But the story really leaves an inspiration to practice Ahimsa and motivates one to stand by it.

Saurabh, Kolkata

महावीर की अहिंसा के मायने सिर्फ किसी जीव को बाहरी रूप से क्षति ना पहुंचने तक सीमित नहीं है, बल्कि महावीर की अहिंसा का अर्थ हैं सभी जीवों के प्रति प्रेम एवं सद्भाव रखना, जिस तरह गांधीजी ने इसी मंत्र का सहारा लेकर भारत की आजादी का आन्दोलन चलाया था उसी तरह हम वर्तमान की सभी जटिल समस्याओं का समाधान अहिंसा में ढूंढ सकते हैं। यदि हम अपना सम्यक प्रयास करें तो हमें किसी भी परिस्थिति में अहिंसा का पालन करने में मुश्किल नहीं होगी, और यदि हम अपने जीवन के छोटे छोटे क्रियाकलापों में अहिंसा का पालन नहीं करेंगे तो हमारे जीवन में अहिंसा पूर्णतः घटित नहीं हो सकती।

Yogendra Jain, Hyderabad

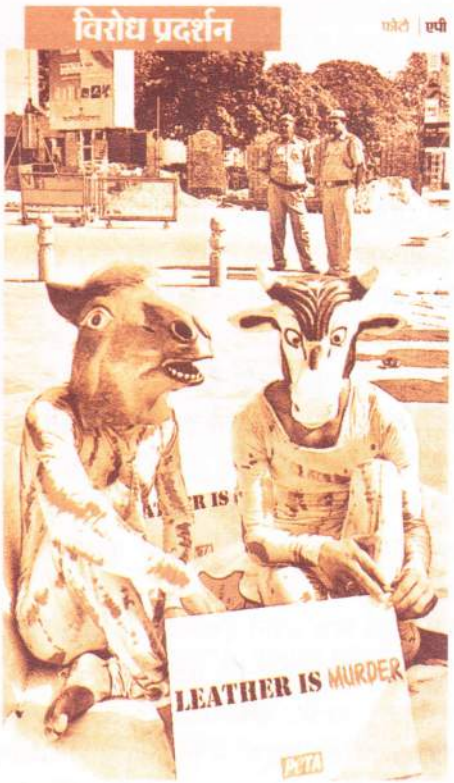

नई दिल्ली में शुक्रवार को गाय और घोड़े के वेश में विरोध जताते पेटा कार्यकर्ता, यह विरोध जानवरों के चमड़े से बने उत्पादों को बंद करने और इस दिशा में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया गया।

दैनिक भास्कर से साभार

Chirping sparrow मुझे मुनिश्री के आर्शीवाद के समान लगती है। पत्रिका का हर कालम हमारे जीवन में फूलों कि तरह महक भर देता है। लक्ष्य कविता और अन्य कविताएं मन मे दीपक की तरह रोशनी उत्साह और नई उमंगें भर देती हैं। शंका समाधान से मेरी अधिकांश समस्याएं स्वतः ही सुलझ जाती है। मेरे परिवार वाले और मित्रगण इसे पढते हैं मुनिश्री कि प्रेरणा स्वरूप इसे हमेशा भेजते रहें।

जो ज्योति सा
मेरे हृदय में
रोशनी भरता रहा
वो देवता.....

नेहा जैन, गंजबासौदा

मुझे Chirping sparrow पत्रिका बहुत अच्छी लगती हैं। मैं आभारी हूँ मैत्री समूह की, जो इस पत्रिका के माध्यम से मुनिश्री क्षमासागर जी का आर्शीवाद, हृदय को छू जाने वाले उनके मार्मिक वाक्य जो अति दुर्लभ हैं, हमारे घर तक पहुँचाता है। मेरा आप सभी से अनुरोध हैं कि इसी तरह मुझे यह पत्रिका भेजते रहें।

दीपाली जैन

मैं Chirping sparrow की नियमित पाठक हूँ। मेरा पूरा परिवार इससे धार्मिक शिक्षा प्राप्त करता है। हमें पिछला अंक नहीं मिला, इससे बहुत दुख हुआ। हम आपसे आग्रह करते है कि यह ज्ञानवर्धक पत्रिका नियमित भेजते रहें, ताकि हमारा पूरा परिवार इससे ज्ञान व प्रेरणा प्राप्त कर सके। हम आपके आभारी रहेगें ।

सीमा जैन, शिवपुरी

I am Young Jaina Awardee of 2004 and very glad that I am still regularly receiving the Chirping Sparrow -a quarterly news letter of Maitree Samooh. The Chirping Sparrow is like blessings of Munishree for me. This definitely adds to my Knowledge about Janinsim. I like ***Mahattvapurna chhitthi*** the most. I read every issue of Chirping Sparrow regularly. With every news letter I happily recall all my unforgettable memories of Young Jaina Award 2004 held at Ashoknagar.

Sandip A. Mohale, SUS4004

मैंने पत्रिका का अंक जनवरी से मार्च 2009 पढ़ा। पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। इस पत्रिका के कॉलम Truth about Tradition और "पीर पराई जाने रे" बहुत अच्छे लगे। यह एक चहचहाती, इतराती चिडिया जैसे हमारे पास आती है और हमारे मन को शांति दे जाती है।
चीं–चीं करती आती ये चिडिया हमारे प्रश्नों का समाधान कर जाती ये चिड़िया पाकर इसको हम खुश हो जाते मन ही मन मुस्काते हैं। मैं आशा करती हूँ, आप हमें यह पत्रिका हमेशा भेजते रहेंगे।

शिल्पी जैन, दमोह C-312119

Forgive Us

To forgive someone requires a big heart. When we forgive someone or seek forgiveness we actually have a fresh page of life to start again. The trust and love get cemented after one forgives someone. Life becomes full of bliss if we know how to forgive someone and seek forgiveness for our mistakes.

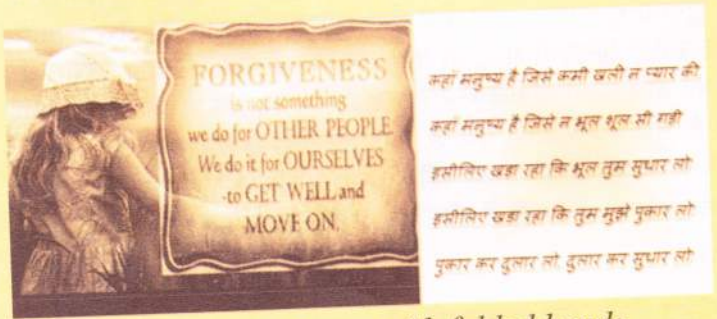

Seeking forgiveness with folded hands, Maitree Samooh

We therefore seek forgiveness for any of our actions, words or feelings that might have hurt you intentionally or unintentionally. (It might be a small or big thing such as not being able to respond to any of the mails and letters on time, inappropriate responses, delay in scholarship cheques, not being able to approve a mail in time, not being able to conduct YJA this year and so on and so forth).

जब तुम

जब तुम खुशियों को बांटोगे वे दुगुनी हो जाएंगी।
जब तुम दुखों को बांटोगे वे आधे रह जाएंगे।।
जब तुम परपीड़ा को समझोगे तो वे दूर हो जाएंगी।
जब तुम प्रेम करूणा का इत्र फैलाओगे तो सब ओर खुशियाँ नजर आएंगी ।।
जब तुम अहिंसा का दीप जलाओगे तो सारे जग में शांति छा जाएगीं ।
जब तुम पर कल्याण के रास्ते पर चलोगे तो सच्चे सुख की अनुभूति होगी ।।
जब तुम वात्सल्य दिखलाओगे तो वसुधैव कुटुम्ब नजर आएगा ।
जब तुम मानवता की अलख जगाओगे तो यह धरती रामराज्य हो जाएगी।।

अनुभा जैन, देवरी

जिन्दगी

जिन्दगी होती है मुस्कुराने के लिए
कुछ खोने, कुछ पाने के लिए
न कि टूट के बिखर जाने के लिए।
उसकी जिन्दगी भी क्या जिन्दगी है
जो भूला दी जाये उसके जाने के बाद ।
जिन्दगी तो वही है –
जो बन जाये दास्तां मौत के आने के बाद ।

कीर्ति जैन, देवरी

The Student's Prayer

Don't impose on me what you know,
I want to explore the unknown
And be the source of my own discoveries.
Let the known be my liberation, not my slavery.
The world of your truth can be my limitation;
Your wisdom my negation.
Don't instruct me; let's walk together.
Let my richness begin where yours ends.
Show me so that I can stand
On your shoulders.
Reveal yourself so that I can be
Something different.

Umberto Maturana

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

एक निमाई पंडित थे और एक रघुनाथ पंडित थे। निमाई पंडित थोड़े समृद्ध थे, उन्होंने राजा को भेंट करने के लिए एक ग्रन्थ लिखा। बचपन से ही रघुनाथ पंडित अभाव में जिए, पर फिर भी योग्यता उनके पास भी कम नहीं थी और उन्होंने भी एक ग्रन्थ लिखा और अपना ग्रन्थ साथ में रखे हुए थे। निमाई पंडित भी अपना ग्रन्थ अपने साथ रखे हुए थे और दोनों जनों का मिलना हो गया नाव में। वे दोनो पुराने मित्र भी थे। निमाई पंडित से रघुनाथ ने पूछा, "क्यों मित्र ? कहाँ जा रहे हो ?" तो निमाई पंडित ने कहा "रघुनाथ, तुम्हें तो मालूम ही है, मैं न्याय का विद्यार्थी रहा हूं, मैंने एक ग्रन्थ लिखा है, राजा को भेंट करने के लिए वहीं जा रहा हूं, तुम सुनोगे ? तो रघुनाथ पंडित ने कहा, "हाँ, हाँ सुनाओ। तो निमाई पंडित ने सुनाना शुरू किया और जैसे जैसे सुनाते चले जाते वैसे वैसे रघुनाथ पंडित आकुल विकल होने लगे और एक स्थिति तो ये आई की उनकी ऑखों से आंसू आ गए। तब निमाई पंडित ने कहा, "रघुनाथ, मैं तुम्हें अपना ग्रन्थ सुना रहा हूँ और तुम इतने दुखी क्यों हो रहे हो ? इतने विकल क्यों हो रहे हो ?" रघुनाथ पंडित ने कुछ नहीं कहा सिर्फ इतना ही कहा, "तुम्हारा ग्रन्थ मेरे ग्रन्थ से भी श्रेष्ठ है, मुझे ये समझ आ गया है, मैं अपना ग्रन्थ ले कर राजा के पास जा रहा था कि शायद कुछ पैसे ईनाम के स्वरूप मिल जायेगें, लेकिन अब मुझे वो भी आशा नहीं है इसलिए घबराहट हो रही हैं।" इससे पहिले की रघुनाथ कुछ समझ पाए, निमाई पंडित ने अपना ग्रन्थ उठाया और नदी में फेंक दिया। रघुनाथ पंडित हाथ पकड़ने लगे और रोकने लगे पर तब तक वे अपना ग्रन्थ नदी में फेंक चुके थे।

रद्युनाथ पंडित ने कहा, "भाई ये क्या करते हो?" तो निमाई पंडित बोले, "मैंने ज्ञान दूसरे को कष्ट पहुंचाने के लिए हासिल नहीं किया। तुम्हारे सुख और खुशी के लिए मैं ऐसे सैकडों ग्रन्थ नदी में समर्पित कर सकता हूँ। लेकिन तुम्हें दुखी नहीं देख सकता। उठो तुम्हारा ही ग्रन्थ राजा को मै भेंट करूंगा और जो पुरस्कार मिलेगा वो तुम्हारा होगा।"